DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara chakia
BRABU – Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part – I
Subject – Sanskrit
Paper – I

5 X 3 = 15 Marks

कारक-सूत्र-व्याख्या

पंचमी विभक्ति

22. ध्रुवमपायेऽपादानम् (1/4/24)

निश्चित अथवा स्थिर (ध्रुवम्) से पृथक् करने में (अपाये) निश्चित अथवा स्थिर की अपादान संज्ञा होती है अर्थात् अलग होने में जो उद्यत हो, वह चाहे चल हो अथवा अचल – उसकी ध्रुव संज्ञा होने से उसमें अपादान होता है। इसके शब्दों में, जिस वस्तु से कोई वस्तु अलग होती है, उस वस्तु को 'अपादान' कहते हैं और उसमें पंचमी विभक्ति होती है। उदाहरण – सः ग्रामादागच्छति – (वह गाँव से आता है) – में 'वह गाँव से अलग होता है', किन्तु गाँव अपने ही स्थान पर स्थिर रहता है। अतः वह अपादान संज्ञक है।